विचार बिन्दु

दीपक सोने का हो या मिट्टी का मूल्य दीपक का नहीं उसकी लौ का होता है जिसे कोई अँधेरा नहीं बुझा सकता। –विष्णु प्रभाकर

मुहिम स्वस्थ मिट्टी: खुशहाली के लिए जरूरी

ईशा फाउन्डेशन के संस्थापक एवं आध्यात्मिक गुरू सद्‌गुरू जग्गी वासुदेव ने मिट्टी बचाने के लिए अपने वैश्विक आन्दोलन के लिए लन्दन से 21 मार्च को 30,000 कि.मी. की यात्रा शुरू की। 27 देशों की यात्रा करते हुये सद्‌गुरू 3 जून को जयपुर पहुँचे और शाम को सीतापुरा स्थित जे.ई.सी.सी. सेन्टर में उपस्थित हजारों दर्शकों को सम्बोधित किया। 5 जून को दिल्ली पहुँच कर उन्होंने विज्ञान भवन में आयोजित कार्यक्रम में प्रधानमंत्री जी के साथ भाग लिया। सद्‌गुरू की 100 दिन की यात्रा 21 जून को अन्तराष्ट्रीय योग दिवस पर कावेरी बेसिन में समाप्त होगी। प्रधानमंत्री जी ने पर्यावरण दिवस पर अपने उक्त उद्‌बोधन में कहा, ''मुझे पक्का भरोसा है कि 'सद्‌गुरू की सेव सॉयल (मिट्टी बचाओ)' यात्रा से दुनिया को मिट्टी के प्रति स्नेह पैदा हुआ होगा।''

निश्चित रूप से सद्‌गुरू वासुदेव ने पूरी दुनिया के लोगों का मिट्टी के स्वस्थ स्वरूप को विलुप्त होने से संभालने और बचाने की ओर आकर्षित किया है। जयपुर में सद्‌गुरू ने आमजन से अपने संवाद में कहा कि, मिट्टी प्रकृति का उपहार है और हमारी विरासत भी। इसमें जैविक सामग्री जो मिट्टी को स्वस्थ और उपजाऊ बनाती है उसे सही नीतियों द्वारा बचाना है और सुरक्षित रखना है। आरगैनिक फार्मिंग द्वारा इसके पोषक तत्व बने रह सकेंगे। उन्होंने स्पष्ट किया कि मिट्टी में कम से कम 3 प्रतिशत जैविक सामग्री होनी चाहिये, जबकि भारत में सिर्फ 0.68 प्रतिशत होने का अनुमान है। देश में लगभग 30 प्रतिशत उपजाऊ मिट्टी पहले से ही बंजर हो चुकी है और फसल के लिए अयोग्य है जिसके कारण मरूस्थलीकरण और मिट्टी के विलुप्त होने का खतरा बढ़ गया है।

मिट्टी बचाने हेतु इसे प्रापर्टी नहीं समझ कर जननी जन्म भूमि के संस्कार पुनर्जीवित करने होंगे। मिट्टी से प्यार करना होगा। 'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी' संस्कृत का श्लोक, अर्थात जननी और जन्मभूमि स्वर्ग से भी श्रेष्ठ है इसे हृदय में संकल्पित करके हमें इसे उर्वरा एवं हरा-भरा रखने के लिए सार्थक प्रयास करने होंगे। फिल्मी गीतों में अनेकों गुण-गान के स्वर हमें सुनने को मिलते हैं जिनमें 'मेरे देश की धरती सोना उगले, उगले हीरा-मोती...' भी शामिल है, हमें खनिज सम्पदा की याद दिलाती है। वन्दे मातरम राष्ट्रगीत की शस्य शामला धरती का स्मरण हम गाकर ही करते हैं। रेलगाड़ी की यात्रा में फिल्माये 'जागृति' फिल्म का गीत 'आओ बच्चों तुम्हें दिखायें झाँकी हिन्दुस्तान की' जिसमें राजपूताना की वीर प्रसूता धरती सहित अनेक प्रदेशों की झाँकी का दिग्दर्शन रेलगाड़ी के खिड़कियों से कराया जाता है, हमें यदा कदा याद दिला कर राष्ट्र भक्ति की भावना जगाता है।

समय आ गया है कि सद्‌गुरू वासुदेव की मुहिम से प्रेरणा प्राप्त कर हमें मिट्टी के स्वास्थ्य पर अपना ध्यान केन्द्रित करें। प्रधानमंत्री जी ने अपने उपरोक्त सम्बोधन में 22 करोड़ किसानों को सॉइल कार्ड देना बताया था। यह कार्ड बहुत उपयोगी संसाधन है जिसे मिट्टी के परीक्षण द्वारा अपडेट कर मिट्टी की वर्तमान स्थिति की जानकारी के आधार पर किसान अपनी जमीन को जैविक खेती की मदद से पुन: जैविक जीवन प्रदान कर सकता है। आरगैनिक खेती द्वारा जैविक स्थिति आयेगी और फसल में अभिवृद्धि होगी। प्रधानमंत्री जी की घोषणा के अनुसार सॉयल कार्ड की सूचना के आधार पर उर्वरक एवं माइक्रोन्यूट्रियन्टस द्वारा लागत में 10 प्रतिशत की बचत और 6 प्रतिशत फसल बढ़ना बताया। जैविक खेती से इसमें अधिक बचत और फसल में अभिवृद्धि होगी यह सुनिश्चित है। अत: किसानों को जागरुक बनाने और आवश्यकतानुसार प्रशिक्षण दिये जाने का अभियान चलाना होगा।

> **निश्चित रूप से सद्‌गुरू वासुदेव ने पूरी दुनिया के लोगों का मिट्टी के स्वस्थ स्वरूप को विलुप्त होने से संभालने और बचाने की ओर ध्यान आकर्षित किया है। जयपुर में सद्‌गुरू ने आमजन से अपने संवाद में कहा कि, मिट्टी प्रकृति का उपहार है और हमारी विरासत भी।**

'सेव सॉयल' मुहिम के लक्ष्यों पर प्रकाश डालते हुये प्रधानमंत्री जी ने बताया था कि मिट्टी को रासायनिक उर्वरकों से बचाना होगा, जैविक खाद को अपनाना होगा, भूमि की नमी को बनाये रखना होगा। इसके लिए जल स्त्रोतों का संरक्षण, वन क्षेत्रों का विस्तार एवं विकास के लक्ष्य निर्धारित कर उनके क्रियान्वयन के प्रयास करने होंगे। यदि सरकारी नीतियों को आवश्यकतानुसार निर्धारित करते हुये अमली जामा पहनाने हेतु सरकारी तंत्र को सक्रिय किया जा सकेगा तभी मिट्टी की सौंधी महक को पुन: प्राप्त करने के सार्थक परिणाम सामने आयेंगे।

दूसरी ओर, ग्रामीण क्षेत्रों के अलावा, शहरी इलाकों में मिट्टी-गोबर के (पूजा हेतु) गणेश और मातृका के बनाने के संस्कार से सबक लेकर जागरुक परिवारों को किचन गार्डन में जैविक खेती से सबजी-फल प्राप्त करने के प्रयास करने होंगे। रसोई से निकले पानी को भी पौधे लगाकर उपयोगी बनाया जा सकता है। यह स्थान, नाली और मिट्टी युक्त भूमि के प्रबन्धन पर निर्भर करेगा।

कहना न होगा, टी.वी. चैनल्स को मिट्टी के महत्व और जैविक खेती के संसाधन और प्रशिक्षण कैसे उपलब्ध होंगे इसका नियमित प्रचार-प्रसार करना होगा जो कर्त्तव्य राजकीय डी.डी. के क्षेत्रीय टी.वी. स्टेशनों के साथ अन्य चैनल्स का भी होना चाहिये। प्रसार भारती द्वारा इस संदर्भ में मार्गदर्शिका एवं रेगूलेटरी नियम बनाने होंगे जिससे सरकार के कथनी-करनी के अन्तर को पाटने में मदद मिलेगी।

समय की जरूरत है कि हम मुहिम स्वस्थ मिट्टी का न केवल समर्थन करें वरन इसके लिए कुछ सार्थक कदम उठायें। सद्‌गुरू के अनुसार, हमारे भोजन का 95 फीसदी मिट्टी की ऊपरी सतह से मिलता है और खतरे की बात यह है कि हमारे पास खेती योग्य केवल 60 वर्षों की मिट्टी बची है। देश की 63 प्रतिशत मिट्टी बेहद खराब स्थिति में है। उसमें भी 0.5 फीसदी से कम जैविक कार्बन है।

हम कब जागेगें, जागरुक होंगे और देश की खेती बचाने के लिए क्या कुछ करेंगे? खतरे की घंटी हीटवेव ने भी बजा दी है। भास्कर दैनिक की खबर है इस साल 16 राज्यों में हीटवेव चली। यह खबर सेन्टर फॉर साईंस एन्ड एनवारयरमेंट (सी.एस.ई.) की वार्षिक रिपोर्ट पर आधारित है।

वरिष्ठ पर्यावरणविद् श्री चिन्मय मिश्र के अनुसार हम सिर्फ विकल्प ही तलाशते हैं, वैकल्पिक नजरिया नहीं खोजते हैं। प्रकृति ने लाखों, करोड़ों वर्षों से अपने भीतर बहुत कुछ सहेज कर रखा था। सन् 1950 में विश्व जनसंख्या 2.5 अरब थी और आज 7.5 अरब है, तीन गुना वृद्धि हुई। हम सिर्फ अर्थव्यवस्था बचाना चाहते हैं। भारत 50 डिग्री तापमान पर शीशे की बाहरी दीवारें बनाकर तापमान वृद्धि रोकना चाहता है। हर खेत को रसायन निर्भर बना कर नदियाँ बचाना चाहता है। बांध बनाकर नदी बचाना चाहता है।

'मनुष्य ने विकास किया और बदले में प्रकृति को क्या दिया? पृथ्वी पर एक डिग्री तापमान बढ़ा दिया, हमने प्रदूषण फैलाया जिससे हर साल लगभग 90 लाख औसत मौते होती हैं। हमने बेहिसाब कीटनाशक डाले जिससे 63 प्रतिशत भूमि खराब हो गई। एक बड़ा संदेश जो प्रकृति इन्सान को भेज रही है–अगर फूल-पौधे, पशु-पक्षी, कीट-पतंगे, शेवाल संरक्षित हैं तो हम भी संरक्षित हैं। हमने ताजी हवा, बहते पानी का आनन्द क्यों छोड़ दिया है?' (दैनिक भास्कर 5 जून 2022 मुख पृष्ठ)

प्रकृति और पर्यावरण ने खतरे की घंटी बजा दी है। हमें पृथ्वी और पर्यावरण को बचाना होगा। सरकारी तंत्र, नीति निर्माताओं को भी बराबर सचेत करना होगा। टी.वी. प्रचार-प्रसार चैनल्स पर अपनी बात पहुँचानी होगी, सोशल मीडिया का सार्थक उपयोग करते हुये मुहिम मिट्टी से जुड़ना होगा। सरकार को जागरुक करने वालों को सहायता राशि या प्रोत्साहन प्रदान कर मुहिम के नेतृत्व के लिए आगे लाना होगा। पर्यावरण शिक्षा में मिट्टी के स्वास्थ्य, पोषक तत्वों और जैविक जैसे पाठ भी शामिल करने होंगे।

राज्य एवं सरकारी तंत्र की कथनी-करनी के अन्तर को, देश के भविष्य के लिए पाटना होगा। स्वस्थ मिट्टी मुहिम को जन-आन्दोलन बनाकर ही स्वस्थ मिट्टी उपलब्ध होगी।

–अतिथि सम्पादक,
आई.सी.श्रीवास्तव,
आई.ए.एस. (से.नि.)
(पूर्व अध्यक्ष, ट्रांसपेरेन्सी, इण्टरनेशनल इन्डिया)

दर्पण कोशिकाएँ – मन दर्पण –1

क्या हमारी ज्ञानेन्द्रियाँ अपनी नियत संवेदना से इतर अन्य ज्ञानेन्द्रियों की संवेदनाओं को अनुभूत कर सकती हैं? जीव विज्ञान की क्रांतिकारी नवीन खोज – मिरर सेल्स – दर्पण कोशिकाएँ – की कार्य क्षमता का विश्लेषण तो यही दर्शाता है कि ऐसा हो सकता ही नहीं, वरन् होता ही है।

आधुनिक उन्नत तकनीक के प्रयोग से मस्तिष्क की क्रियाशीलता को नापना आज संभव है। मस्तिष्क का जब भी कोई भाग कुछ भौतिक क्रिया करने या कुछ महसूस करने को होता है तो वहां की कोशिकाओं में तरंगें उठती हैं और उस भाग का रक्त-संचार बढ़ जाता है। तरंगें और रक्त-संचार दोनों मापे और आँके जा सकते हैं। आज इतने सूक्ष्म इलेक्ट्रोड उपलब्ध हैं कि उन्हें मस्तिष्क की एक-एक कोशिका पर चिपकाया जा सकता है। जब भी कोशिका तरंगित होगी उस पर स्थित इलेक्ट्रोड इसकी सूचना दूर स्थित मापक यंत्र में अंकित होने को भेज देगा। मस्तिष्क के जिस भाग की कोशिकाएँ उद्वेलित होंगी, वह भाग, मापक यंत्र में वैसे ही अंकित हो जायगा। जिस क्रम में कोशिकाएँ उद्वेलित हुई, वह क्रम भी। जैसे आपने टेबल पर रखे कप को उठाया तो इस काम में काम आने वाली मांस-पेशियों को संचालित करने वाले मस्तिष्क के भाग में उठी तरंगें, मापक यंत्र में उसी भाग में अंकित हो जायेंगी। मांस-पेशियाँ जिस क्रम में काम ली गई थीं, वह क्रम भी चित्र में रिकार्ड हो जायगा। ज्ञानेन्द्रियों से आने वाले संवेग मस्तिष्क के जिस भाग में महसूस किए जायेंगे, उसी भाग में अंकित होंगे।

डॉ. श्रीगोपाल काबरा

बिना इलेक्ट्रोड इम्लांट किए बाहर से ही उन्नत चित्रण विधि (फंक्शनल एम आर आई) से मस्तिष्क के क्रियाशील हुए भाग के रक्त-संचार का आकलन कर क्रियाशील भाग को चिन्हित किया जाता है।

मस्तिष्क का जो भाग मांस-पेशियों का संचालन करता है, वह भाग मोटर कोर्टेक्स (चालक) कहलाता है। मोटर कोर्टेक्स मांस-पेशियों को क्रियाशील करने के संवेग भेजता है। ज्ञानेन्द्रियों से आने वाले संवेग सेन्सरी कोर्टेक्स (संवेदक) में महसूस किए जाते है। देखने, सुनने, सूँघने, छूने और स्वाद के संवेगों की अनुभूति सेन्सरी कोर्टेक्स के अलग-अलग केन्द्रों में होती है।

ज्ञानेन्द्रियों से आई संवेदनाओं को अनुभूत करने की विस्तृत प्रक्रिया होती है। संवेग पहुँचते हैं। (Received)] महसूस किए जाते हैं। (Perceived)] पहचाने (स्पर्श, स्वाद, श्रवण, दृष्टि, गंध द्वारा) जाते हैं। (Interpreted)] उनका विश्लेषणात्मक आकलन होता है। (Evaluated)] और फिर होती है प्रतिक्रिया (Reaction)- जैसे आवाज –सुनी, –समझी, –पहचानी, बम्ब फटने की है – आप पलटे और भाग खड़े हुए। इस पूरी प्रक्रिया को अंजाम देने के लिए केन्द्र के सेन्सरी, प्रिसेन्सरी और साइकोसेन्सरी कोर्टेक्स भाग लेते हैं। इसी प्रकार मोटर कार्टेक्स को प्राप्त सूचना के अनुरूप उद्वेलित होने की प्रतिक्रिया की भी एक निश्चित प्रक्रिया होती है। उपयुक्त मांस-पेशियों को क्रियाशील करने को संवेग शुरू होते हैं (Initiation)] काम में आने वाली मांस-पेशियों का क्रम व्यवस्थित होता है (Organization)] उनमें समन्वय निश्चित होता है (Coordination)] और फिर उनका संचालन (Execution)- मांस-पेशियों से प्रायोजित कार्य को अंजाम देने के लिए इस प्रक्रिया में भाग लेते हैं मोटर, प्रिमोटर और साइकोमोटर कार्टेक्स।

दर्पण (श्ीदे) कोशिकाएँ : एक वैज्ञानिक मस्तिष्क-कोशिकाओं के क्रियाशील होने का अध्ययन कर रहे थे। उन्होंने बंदर की खोपड़ी खोल कर मस्तिष्क पर इलेक्ट्रोड्स लगा दिए। खोपड़ी बंद कर दी। बंदर ठीक हो गया तब प्रयोग शुरू किया गया। बंदर को

मूंगफली खाने को दी। बंदर ने मूंगफली देखी, उंगलियों से उठाई, छीली, मुँह में रखी, चबाई और खा ली। प्रयोगकर्ता ने देखा कि मापक यंत्र में मस्तिष्क के किस भाग में कैसे क्रमवार क्रियाशीलता अंकित होती गई। जिन कोशिकाओं में तरंगे उठी वे चित्रित हो गई। ये वे मोटर कोशिकाएँ थी जिन्होंने मूंगफली खाने के क्रम में मांस-पेशियों का संचालन किया था। एक दिन प्रयोगकर्ता मापक यंत्र के पास बैठा था। उसने थैली से एक मूंगफली निकाली, छीली और खाने लगा। उसको ताज्जुब हुआ जब उसने देखा कि मापक यंत्र में उसी जगह क्रियाशीलता अंकित हो गई। यह कैसे हुआ? क्रिया तो प्रयोगकर्ता ने की थी बंदर ने नहीं। बंदर ने तो प्रयोगकर्ता को वह क्रिया करते देखा मात्र था। फिर बंदर के मस्तिष्क का वही भाग उद्वेलित कैसे हुआ? प्रयोग फिर किया गया। हर बार वैसा ही हुआ। क्रिया करने के लिए मस्तिष्क का जो भाग तरंगित हुआ था, किसी को वह क्रिया करते देखने पर भी वही भाग तरंगित हुआ। जैसे वे कोशिकाएँ दर्पण हों – दर्पण कोशिकाएँ। ये कोशिकाएँ प्रिमोटर कोर्टेक्स में स्थित थीं, अर्थात् मोटर और साइकोमोटर कोशिकाओं के संधिस्थल पर। और प्रयोग हुए। देखा गया कि प्रयोगकर्ता ने आड़ से मूंगफली छीली तब भी मूंगफली छिलने की आवाज मात्र सुन कर ही बंदर के मस्तिष्क का वही भाग तरंगित हुआ। मूंगफली खाने की मुँह से गंध और चबाते हुए स्वाद के चहरे पर आये भाव देख कर भी बंदर के मस्तिष्क में वही प्रक्रिया हुई। क्रिया से जुड़े सभी संवेग – दृश्य, आवाज, गंध, स्वाद और मांस-पेशियों के सिकुड़ने का क्रम सभी दर्पण कोशिकाओं में प्रतिबिम्बित हुआ और संवेगों का सामूहिक बिम्ब स्मृति में अंकित हो गया। दर्पण कोशिकाएँ संवेगों, सेंवदनाओं (दृश्य, बोल, गंध, स्वाद, स्पर्श) का संकलन, समन्वय, संचयन और सुसंस्मरण करने का माध्यम होती हैं। हर संवेदना की अपनी विशिष्ट दर्पण कोशिकाएँ होती हैं। दर्पण कोशिकाओं व उनकी संपर्क कोशिकाओं के तंत्र में संवेगों की गूंज व अनुगूंज चेतना, सोच, भाव और कल्पना को जन्म देती हैं। सेन्सरी (संवेदी) और मोटर (चालक) कोशिकाओं के संधिस्थल पर स्थित दर्पण कोशिकाएँ एक और विभिन्न संवेदी कोशिकाओं से संपर्क और समन्वय करती हैं और दूसरी और इनकी सूचना चालक कोशिकाओं को देती हैं। दर्पण कोशिकाएँ इस मायने में सेतु कोशिकाओं का काम करती है।

डॉ. श्रीगोपाल काबरा,
वरिष्ठ चिकित्सक, जयपुर

टॉपर बेटी रवीना गुर्जर ठगी का शिकार

नारायणपुर, (निसं)। उपखंड क्षेत्र की ग्राम पंचायत गढ़ी मामोड़ में बकरी चराते हुए सरकारी स्कूल में टॉप करने वाली बेटी रवीना गुर्जर ठगी का शिकार हो गई।

परिवार की आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण लोगों ने जन सहयोग से 63 हजार रुपये की मदद बेटी को दी लेकिन बेटी साइबर ठगों का शिकार हो गई। जानकारी के अनुसार 13 जून की शाम को साइबर ठगों ने बेटी की मां के खाते से 63 हजार रुपये निकाल लिए । बेटी को आर्थिक मदद का बहाना कर ओटीपी नम्बर पूछे और 25-25 हजार 2 बार में जबकि 13 हजार रुपये तीसरी बार में उसकी मां के बैंक अकाउंट से निकाल लिए।

जब घटना का पता परिवार को चला तो होश उड़ गए। इसकी रिपोर्ट बेटी रवीना की ओर से नारायणपुर थाने में दर्ज कराई गई है। दरसअल नारायणपुर के ग्राम पंचायत गढ़ी ममोड की रहने वाली रवीना गुर्जर ने राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा जारी 12वीं कला वर्ग के परिणाम में 93 प्रतिशत अंक प्राप्त किए थे। रवीना ने थानागाजी और नारायणपुर के

> ■ **होनहार बेटी के लिए एकत्रित हुए 63 हजार रुपये साइबर ठगों ने खाते से निकाले**

सरकारी स्कूल में बालिका वर्ग में टॉपर रही थी। होनहार बेटी के साथ हुई इस घटना से ग्रामीणों में रोष है। इधर थानाधिकारी अजय सिंह शेखावत ने बताया कि मामले के संबंध में प्रकरण दर्ज कर लिया गया है और आरोपियों की तलाश जारी है।

नारायणपुर की होनहार बेटी रवीना और माँ विद्या देवी।

महान व्यंग चित्रकार आर.के. लक्ष्मण

कहते हैं कि हास्य लेखक एवं व्यंग चित्रकार आर.के. लक्ष्मण का एक अंश करोडों भारतीयों के दिल में बसता है। लक्ष्मण का आम आदमी (कामन मैन) हमेशा के लिए अमर रहेगा। देशवासियों की सभी पीढियाँ उनको सदा-सदा के लिए याद रखेंगी। आर.के. लक्ष्मण की नजर से व्यथित आम-आदमी की परेशानी नहीं छुप सकती थी। सामाजिक व राजनीतिक क्षेत्रों में उनकी तीक्ष्ण दृष्टि, गहराई से विवेचन व परीक्षण कर लेती थी, जो उनके कार्टूनों में स्पष्ट झलकती थी।

कामन मैन, आर.के. लक्ष्मण का बनाया आम आदमी का किरदार था, जो एक सीधा-साधा अपने काम में व्यस्त इन्सान है। जो प्रतिदिन कामिक स्ट्रिप, 'यू सैड इट' के नाम से 'द टाइम्स आफ इंडिया' में सन् 1951 से प्रकाशन शुरू हुआ था। कामन-मैन (आम आदमी) का चरित्र ऐसा था कि जो, चुपचाप शांतिपूर्वक मूकनायक की तरह सभी सामाजिक-राजनैतिक घटनाओं का साक्षी रहा है। लक्ष्मण ने सात दशक तक लगातार व्यंग कार्टूनों के द्वारा पत्रकारिता करते हुए व्यतीत किये। जिसकी शुरूआत उन्होंने एक स्थानीय अखबार 'द फ्री प्रेस जनरल' एवं स्वराज व बिल्टज जैसी मैगजीन्स में पार्ट टाईम जॉब करके की।

आर.के.लक्ष्मण के बडे भाई लेखक एवं उपन्यासकार आर.के. नारायन 'द हिन्दू' अखबार में लघुकथाऐं लिखते थे। इन कथाओं के चित्र बनाने का कार्य, लक्ष्मण को अपनी कालेज शिक्षा के दौरान मिला। बाद में उन्होंने अपने बडे भाई आर.के नारायन-कलाकार के टी.वी. सीरियल 'मालगुडी डेज' की लघुकथाओं के लिए कार्टून बनाए ।

प्रसिद्ध कार्टूनिस्ट आर.के. लक्ष्मण को अकसर दिल्ली का पाईड पाइपर चिंतकबरा-मुरलीवाला) तथा भारतीय स्वतंत्र चेतना को जगाने वाला कहा जाता था। वह स्कैच व आर्टवर्क्स द्वारा, टीवी शो के लिए चित्र बनाते थे। उन्हें टाइम्स आफ इण्डिया का पर्याय माना जाता था। उनका कहना था कि उनके व्यक्तित्व में जीवन भर आम आदमी रहा है। मुझे वह कभी नहीं मिला, किन्तु

यादराम सिंह यादव

वह हमेशा मेरे विचारों में मेरे साथ रहा परन्तु उसने मुझे ढूंढ लिया। सभी भारतीयों को प्रतिनिधित्व देने के लिए उन्होंने बंगाली, तमिल व पंजाबी आदि में आम आदमी के कार्टून बनाये।

आर.के. लक्ष्मण एक स्कूल हैडमास्टर की सबसे छोटी सन्तान थे। रासीपुरम कृष्णास्वामी उनका पूरा नाम था। घर के बडे बुजुर्ग सभी प्यार से उन्हें लक्ष्मण कहते थे। इसलिए उनका संक्षिप्त नाम आर.के. लक्ष्मण पड़ा था। स्कूल में लक्ष्मण की पीपल के पत्ते को चित्रित करने से अध्यापक ने उनकी प्रशंसा की और उनमें एक कलाकार नजर आया। कार्टून चित्र बनाने की उनकी बचपन से ही गहरी रूचि थी। घरवालों को उनकी पेंटिंग-ड्राईंग व स्केच अच्छी लगती थी। वह उनके चित्रों की प्रशंसा करते थे। वह इंग्लैन्ड से प्रकाशित इलेस्ट्रेड मैगजीन मंगाकर पढ़ते थे, जो लन्दन से पानी के जहाज द्वारा (शिप-मेल) से उनके मैसूर स्थित निवास पर आती थी। इसी मैग्जीन के कार्टूनों से वह नाम, स्टाइल तथा तकनीक सीखते रहते थे। जिसमें डेविड-लौ आफ पंच एण्ड लिग-वर्थ जैसे विश्व प्रसिद्ध कार्टूनिस्टों के लेख-आलेख व कार्टून्स प्रकाशित होते थे। उन पर प्रसिद्ध व्यंग चित्रकार डेविड ला का विशेष प्रभाव पड़ा था। आर.के. लक्ष्मण ने अपनी आत्मकथा 'द टनल आफ टाईम' में लिखा है कि वह ना तो कोई डायरी लिखते, कलेन्डर भी नहीं देखते थे, यहां तक कि समय देखने के लिए घडी भी नहीं पहिनते थे। इसलिए उनके चित्रों को समय सीमा में बांधना संभव नहीं है। वह हमेशा चुपचाप व शांत होकर अपना कार्य करते रहते थे। लक्ष्मण संध्या (गोधूली के समय) व्यस्ततम् बाजार में एक बैंच पर जाकर घन्टों तक बैठते। वहां व्यस्त बाजार की गतिविधियों के, पसन्दीदा करेक्टर का स्कैच बनाते थे। इनके कार्टूनों के स्कैच कभी खत्म ना होने वाले, स्कैच बनाते रहते थे।

सन् 1985 में वह पहिले ऐसे व्यंग चित्रकार बन गये, जिनकी अकेले की (सोलो) प्रदर्शनी लन्दन में लगी थी। उनके कामन मैन के जीवन चरित्र पर आधारित एक लघु फिल्म 'खट्टा-मीठा' में कार्टूनिस्ट का किरदार, प्रसिद्ध अभिनेता अक्षय कुमार ने निभाया है। लक्ष्मण स्थानीय रफ-टफ क्रिकेट टीम के हास्य कैपटेन थे। इसीलिए उनको पाईप पाईपर आफ दिल्ली के नाम से जाना जाता था। आर.के. लक्ष्मण ने अपनी 'टाइमलैस जर्नी' में अनेकों हास्य रचनाओं तथा व्यंग कलाकृतियों की रचना की थी। उनकी प्रमुख रचनाओं में 'दी इलोक्वेन्ट ब्रुश' (एशियन पेन्ट लोगो) 'वैस्ट आफ लक्ष्मण सीरीज' 'यू सैड इट', होटल रेविरिया, दी मैसेन्जर, सर्वेन्ट आफ इण्डिया, दी टनल आफ टाइम (आटोबायोग्राफी), मल्टी मीडिया, इण्डिया थ्रू दी आईज ऑफ आर.के. लक्ष्मण दैन टू नाऊ, लक्ष्मण रेखाज तथा आर.के. लक्ष्मण की दुनिया सब टीवी पर एक शो आदि प्रमुख हैं।

आर.के. लक्ष्मण को 'कामन मैन' नाम उनकी व्यंग रचना तथा टाइम्स आफ इण्डिया के लिए उनके द्वारा प्रतिदिन लिखी जाने वाली कार्टून श्रृंखला 'यू सैड इट' की लोकप्रियता के लिए जाना जाता है जो 1951 में प्रारम्भ हुयी थी। लक्ष्मण को कामन मैन के कार्टून चरित्र ने उन्हें सर्वोच्च प्रसिद्धी दिलायी। कामन मैन का करेक्टर प्रजातंत्र के साक्षी एवं प्रहरी (@bpeyeer keäJen) के रूप में चित्रित किया था। हमारे देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी

ने आर.के. लक्ष्मण की पोती के द्वारा लिखित 'टाइमलैस लक्ष्मण' पुस्तक की दिनांक 18 दिसम्बर 2018 को लांचिंग के वक्त उनके कामन मैन, टाइमलैस लक्ष्मण तथा उनके अनेकों कार्टून्स के बारे में चर्चा की।

मोदी जी ने कहा कि उनके कार्टून्स अपने समय के सामाजिक व राजनीतिक सच्चाई को निष्पक्षता, ईमानदारी से सन्देश प्रदान करते हैं। उनका पूना (महाराष्ट्र) में 26 जन 2015 को 93 वर्ष की आयु में निधन हो गया। मोदी जी ने ट्वीट किया कि हर समय जनता में मौजूद रहने वाले आर.के. लक्ष्मण को कार्टूनों के माध्यम से याद करने का दिन है। उन्होंने अपने 18 दिसम्बर 2018 के भाषण में वीडियो को शेयर करते हुए कहा कि लक्ष्मण के कार्टून समाज को समाज-विज्ञान के पाठ पढाने से कम नहीं हैं। वह केवलमात्र एक व्यक्ति ही नहीं बल्कि करोडों आम नागरिकों के दिलों में छिपे विचारों को कार्टून्स के माध्यम से अभिव्यक्त करते थे। प्रधानमंत्री ने आगे कहा कि महाराष्ट यूनीवर्सिटी को आर.के. लक्ष्मण के उपर रिसर्च या केस स्टडी उनके कामन-मैन के प्रभावों को लेकर करनी चाहिए। प्रधानमंत्री मोदी द्वारा वालेबाडी पूना (महाराष्ट्र) में वेटेरियन कार्टूनिस्ट आर.के. लक्ष्मण तथा उनके बडे भाई आर.के. नारायन पर बनाये म्यूजियम कम आर्ट गैलरी का उद्‌घाटन (रविवार 07.03.2022 को) कर जनता को समर्पित किया है। जिसमें दो बडे स्वचालित कमरे हैं, जिनमें एक में आर.के. लक्ष्मण का जीवनवृत्त तथा दूसरे कमरे में नौ स्थानों पर 'मालगुडी डेज' के लेखक आर.के. नारायन की लघुकथाओं के प्रकाशित मिनियेचर चित्रों के संग्रह को प्रदर्शित किया गया है। गैलरी में प्रसिद्ध व्यंग चित्रकार लक्ष्मण की स्टोरी को आम आदमी की नजर से लिखा गया है। म्यूजियम व आर्ट गैलरी से गुजरने के बाद अन्त में कामनमैन का होलोग्राम (त्रिस्तरीय चित्र) दिखाई देता है जो कि कलाकार, बोमन-ईरानी ने अंग्रेजी में व दिलीप प्रभावलकर ने मराठी भाषा में दर्शकों को समझाने के लिए रूपान्तरण कर बनाया गया है। यह कार्य लक्ष्मण की पुत्र वधु ऊषा लक्ष्मण ने एक संस्थान के रूप में तैयार किया है। जिसको अन्य विश्वविद्यालयों से भी जोड़ा जायेगा, जिससे कि छात्रों एवं कलाकारों के अध्ययन के लिए एक खुली प्रयोगशाला मिल सकेगी। आर.के. लक्ष्मण को उनके जीवन काल में, आम जनता के लिए अपने कार्टूनों के माध्यम से की गयी समर्पित पत्रकारिता के लिए अनेकों राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है जिसमें वी.डी. गोयनका पुरस्कार-द इण्डियन एक्सप्रेस (2) दुर्गारतन स्वर्ण पदक-हिन्दुस्तान टाईम्स (3) पदम भूषण-1973 भारत सरकार (4) पदम विभूषण-2005 भारत सरकार रोमन मेगसिस पुरस्कार 1984 अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार (कार्टून जर्नलिज्म के लिए) प्रमुख हैं। आम आदमी को जीवन समर्पित करने वाले ऐसे महान हस्ती की कांस्य प्रतिमा पूना में लगायी जाकर तथा भारतीय डाक विभाग द्वारा उन पर डाक टिकिट जारी कर श्रद्धांजली अर्पित की है। आर.के. लक्ष्मण का त्याग एवं समर्पण आम जनता के लिए अमर रहेगा। जनता उन्हें हमेशा उनके कार्टूनों के द्वारा स्मरण करती रहेगी।

यादरामसिंह यादव,
अधिवक्ता एवं स्वतंत्र लेखक

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

गुरूवार 16 जून, 2022

आषाढ़ मास, कृष्ण पक्ष, द्वितीया तिथि, गुरूवार, विक्रम संवत 2079, पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र दिन 12:37 तक, ब्रह्म योग रात्रि 9:08 तक, गर करण प्रात: 9:46 तक, चन्द्रमा सांय 5:25 पर मकर राशि में प्रवेश करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मिथुन, चन्द्रमा-धनु, मंगल-मीन, बुध-वृष, गुरू-मीन, शुक्र-मेष, शनि-कुम्भ, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

आज भद्रा सांय 7:58 से शुक्रवार प्रात: 6:11 तक है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ सूर्योदय से 7:19 तक, चर 10:45 से 12:27 तक, लाभ-अमृत 12:27 से 3:53 तक, शुभ 5:35 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 1:30 से 3:00 तक। सूर्योदय 5:37, सूर्यास्त 7:18

मेष

धार्मिक स्थान की यात्रा का कार्यक्रम बन सकता है। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं। परिवार में शुभ कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी।

वृष

अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। नवीन कार्यों करे टालना ठीक रहेगा। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। आर्थिक मामलों में परेशानी हो सकती है। यात्रा टालना ठीक रहेगा।

मिथुन

परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी।

कर्क

स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। व्यावसायिक सुविधाएं बढ़ेगी। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।

सिंह

परिजनों के व्यवहार के कारण मन खिन्न हो सकता है। आपसी ईर्ष्या-वैमनस्यता के कारण परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

कन्या

घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

तुला

व्यावसायिक कार्यों से संबंधित वार्ता सफल रहेगी। व्यावसायिक कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। धन प्राप्त होगा। परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे।

वृश्चिक

आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे।

धनु

व्यावसायिक कार्यों से संबंधित अड़चनें दूर होने लगेंगी। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

मकर

घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। स्वास्थ्य संबंधित परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। अतिथियों का आगमन बना रहेगा।

कुंभ

आर्थिक/वित्तीय मामलों में प्रगति होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

मीन

व्यावसायिक स्थिति में सुधार होगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। महत्वपूर्ण कार्यों में सफलता से मनोबल बढ़ेगा। आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी।